ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor = 8.35, January-June 2026, Submitted in January 2026

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में चित्रित दलित समाज की चुनौतियाँ

सोहन लाल रांगेरा, शोधार्थी, हिंदी विभाग, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर Sonurangerass@gmail.com
डॉ. आनन्द राय, शोध निर्देशक, हिंदी विभाग, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर

शोध सारांश

हिंदी दलित साहित्य में ओमप्रकाश वाल्मीकि का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने अपने कथा-साहित्य में दलित समाज के जीवन-संघर्ष, सामाजिक अन्याय, शोषण और अस्मिता की लड़ाई को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है। उनकी कहानियाँ केवल साहित्यिक रचनाएँ नहीं, बल्कि सामाजिक दस्तावेज हैं, जो भारतीय समाज की जटिल संरचना को उजागर करती हैं। इस शोध-पत्र में उनकी कहानियों के माध्यम से दलित समाज की प्रमुख चुनौतियों का विस्तृत विश्लेषण किया गया है।

बीज शब्द - दलित साहित्य, जीवन-संघर्ष, सामाजिक अन्याय, शोषण और अस्मिता I

1. प्रस्तावना-

भारतीय समाज में जाति-व्यवस्था ने दलितों को सदियों तक हाशिए पर रखा है। सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्तर पर उन्हें निरंतर शोषण का सामना करना पड़ा। ओमप्रकाश वाल्मीकि ने इस यथार्थ को अपनी कहानियों में गहराई से चित्रित किया है। उनकी रचनाएँ दलितों के जीवन के उन पहलुओं को सामने लाती हैं, जिन्हें मुख्यधारा के साहित्य में लंबे समय तक नजरअंदाज किया गया। कहानीकार ओमप्रकाश वाल्मीकि ने अपनी कथा कृतियों के केंद्र में ग्रामीण समाज के पीड़ित, वंचित, बंधुआ मजदूर, खानाबदोश, सफाईकर्मी, शिल्पकार, खेतिहर श्रमिक आदि के दुखद जीवन को उद्घाटित किया है जो गहन त्रासदियों, जिल्लत एवं अत्याचार का शिकार होता आया।

इसके साथ ही उन्होंने अपनी कहानियों में शहरी समाज में नरकीय जीवन जीने को बाध्य हाशियाकृत आदमी, मैला ढोने को विवश समुदाय, जाति तथा वर्ण के दंश से पीड़ित, शिक्षित दलित, सांस्कृतिक-धार्मिक उत्पीड़न की मार झेल रहे दरिद्र एवं शोषित मानव तथा अमानवीय यातनाओं से गुजरती दलित नारियों के विलक्षण संसार का चित्रण किया है। उनकी कहानियों की कथा में समाज के सर्वाधिक उपेक्षित, बहिष्कृत, पीड़ित एवं वंचित मनुष्यों की संवेदना है जो सामान्यतः दरिद्रता, भूख, अभाव, बेरोजगारी तथा बीमारी से पीड़ित बना हुआ है। ओमप्रकाश वाल्मीकि सामाजिक सरोकारों के कहानीकार हैं जिन्होंने अपने लेखन में अपने समाज के निराले अनुभव, दुख, यथार्थ जीवन की सच्चाइयों और विसंगतियों का सशक्त उद्घाटन किया है।

2. साहित्यिक पृष्ठभूमि और दलित विमर्श-

दलित साहित्य का उद्देश्य केवल पीड़ा का वर्णन करना नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन लाना है। इसमें सामाजिक यथार्थ की ज्वलंत समस्याओं के साथ गहरी मानवीय संवेदनाओं के द्वारा समाज के सबसे दुर्बल वर्ग के संघर्ष को अभिव्यक्त किया गया है। ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में दलित मनुष्य की वेदना, संघर्ष, विद्रोह है और जिजीविषा का स्वर व्यक्त हुआ। उन्होंने दलित समाज को ही कहानी का केंद्र विषय बनाया तथा उनके मानवीय अधिकारों का समर्थन किया। ओमप्रकाश वाल्मीकि ने दलित अस्मिता तथा अपनी रचना प्रक्रिया के विषय में लिखा "कविता हो या कहानी, मेरे लिए आनंद या रसास्वादन की वस्तु नहीं है। समाज की गहन पीड़ा, उनकी मान्यताएं, चिंताएं, उनका संघर्ष, मुक्ति चाह को शब्दबद्ध करना मेरे लिए जरूरी है ताकि बदलाव की सुगबुगाहट पैदा हो सके। साहित्य हमें जिंदा रखता है"।1

ओमप्रकाश वाल्मीकि स्वयं को अंबेडकरवादी साहित्यकार मानते हैं। उनकी विचारधारा में अंबेडकरवादी दर्शन के मूल्यों का समावेश भी है। मराठी दलित साहित्य का गहरा प्रभाव उनके व्यक्तित्व पर पड़ा। उन्होंने अपनी कहानियों में दलित अस्मिता, दलित संघर्ष और दलित मनुष्य की पीड़ा को अभिव्यक्ति का विषय बनाया। उनका कहना है "मैंने अपनी रचनाओं में डॉ अंबेडकर विचार- दर्शन एवं संघर्ष की मूल भावना को अभिव्यक्त करने तथा समग्रता से दलित संदर्भों को जोड़ने के प्रयास किए हैं। मैं उन सवालों से रूबरू होकर जूझना चाहता हूं जो दलित अस्मिता से जुड़े हैं"।2 यह सत्य है कि दलित मनुष्य की संवेदना अनुभूति विचार और अभिव्यक्ति की सशक्तता तथा उनकी कहानियों में व्याप्त है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि का कथा-साहित्य दलित विमर्श की प्रमुख धारा का प्रतिनिधित्व करता है। नवीन सदी में भारत का परिदृश्य विभिन्न अंतर्विरोधों से भरा हुआ है। भारत के असंतुलित आर्थिक विकास ने लाखों लोगों को हाशिए पर पहुंचा दिया। उनकी दरिद्रता, भूख, बेरोजगारी चिंता का विषय है। एक तरफ महानगरों में एक बड़ी आबादी फुटपाथों, झोपड़-पट्टियों, गंदी- बस्तियों तथा बहिष्कृत स्थानों पर जीवन जीने के लिए बाध्य हुई। दूसरी तरफ ग्रामीण समाज में जमीदारों और भूपतियों ने दलितों पर अमानुषिक अत्याचार किया। उन्हें श्रम, शोषण, यौन प्रताड़ना, आगजनी, हिंसा और अत्याचार की दुखद स्थितियों का सामना करना पड़ा। ओमप्रकाश वाल्मीकि ने अपनी कहानियों में नई सदी की चुनौतियों को स्वीकारा था। उनकी कथाओं का यथार्थवादी वस्तु पक्ष भारतीय समाज के अंतर्विरोधों तथा विकृतियों को स्पष्ट करता है। उनकी रचनाएँ— शोषण के खिलाफ प्रतिरोध, आत्मसम्मान की चेतना, सामाजिक समानता की मांग को सशक्त रूप में प्रस्तुत करती हैं।

3. प्रमुख कहानियाँ और उनका संदर्भ-

नई सदी में दलितों का संघर्ष वर्चस्ववादी ताकतों के विरुद्ध है। दलितों को धार्मिक असमानता, सांस्कृतिक विभेदता, जातिगत दंश और सामाजिक कुप्रथाओं के कारण अन्याय से लड़ना पड़ता है। उनकी 'सलाम, बैल की खाल, गौ हत्या, सपना, मुंबई कांड आदि कहानियों में इस कटु यथार्थ को अभिव्यक्त किया गया है। भारतीय समाज में अनेक कुप्रथाएं तथा अंधश्रद्धाएं हैं जिनके कारण दलितों को पीढ़ी दर पीढ़ी अपमानित किया गया। ओमप्रकाश वाल्मीकि ने दलित समाज की विभिन्न समस्याओं का न केवल अपनी लेखनी के माध्यम से चित्रण किया बल्कि दलित चेतना के द्वारा जागरूकता की नवीन सोच उत्पन्न की। 'सलाम' कहानी में कमल उपाध्याय और दलित हरीश दोनों घनिष्ठ मित्र हैं। दोनों की मित्रता में जातिभेद या वर्ण भेद की मानसिकता नहीं है। हरीश के विवाह में बराती बनकर आये कमल को निम्न जाति का व्यक्ति मानकर अपमानित किया गया। यहां तक कि उपाध्याय होते हुए भी उसको दुकानदार ने चाय देने से इनकार कर दिया क्योंकि वह एक दलित की बरात में आया था। इस कहानी में दलित वर्ग के साथ होने वाले भेदभाव, अपमान तथा कुप्रथाओं को दिखलाया गया है, वहीं सामंती लोगों का किस तरह वर्चस्व बना हुआ है जो दलित को मनुष्य तक नहीं समझते।

गांव की सामंती सोच वाले व्यक्ति दलित वर्ग को परतंत्र बनाए रखना चाहते हैं- "गांव की नाक तो तूने पहले ही कटवा दी जो लौंडिया कूं दसवीं पास करवा दी। क्या जरूरत थी लड़की कूं पढ़ाने की, गांव की हवा बिगाड़ रहा है तू। अब तेरा जंवाई सलाम पे जाने से मना कर रहा है.... उसे समझा दे... सलाम के लिए जल्दी आवे"।3

यह कहानी दलितों की सामाजिक स्थिति और आत्मसम्मान की लड़ाई को दर्शाती है। दलितों की शिक्षित युवा पीढ़ी स्वाभिमान और जागरूक हो चुकी है। वह सामंती समाज की कुप्रथाओं का विरोध करती है। हरीश अपने अदम्य विश्वास के बल पर सलाम कुप्रथा को ठोकर मारता है।

'सपना' कहानी में ओमप्रकाश वाल्मीकि ने शिक्षित समाज के जाति-भेद, ऊंच -नीच वर्ण भेद पर चोट की है। कहानी में मंदिर निर्माण के सभी कार्यों में नटराजन, ऋषिराज और गौतम का सहयोग मिला परंतु मंदिर में मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर नटराजन अपने सहकर्मी गौतम को अपमानित करता है क्योंकि वह अनुसूचित जाति का है जो बालाजी की मूर्ति के सामने सपरिवार बैठा हुआ था। कहानी में नटराजन और रामलोचन उपाध्याय न केवल दलित गौतम को अपमानित करते हैं बल्कि धर्मशास्त्रों की दकियानूसी संकीर्ण सोच को कायम करते हैं –"अरे, यह मंदिर उसका कैसे हो गया। ज्यादा ही पूजा पाठ का शौक है तो अपना मंदिर बना ले अलग से। किसने रोका है। यह हमारा है, हम पूजा पाठ अनुष्ठान अपने ढंग से करेंगे। उसमें किसी शूद्र या म्लेच्छ का प्रवेश निषेध है"।4 मंदिर निर्माण में दलित गौतम और ऋषि ने तन-मन से सेवा की, उन्हें पुलिस ने हिंसा करने तथा मंदिर को क्षति पहुंचाने के जुर्म में गिरफ्तार कर लिया। कहानी में दर्शाया गया है कि दलितों का सपना कैसे टूटता है, मानवीय संबंध कैसे गौण हो जाते हैं तथा जाति भेद की दीवार आज भी ज्यों की त्यों है।

'गौ हत्या' कहानी में गांव का जमीदार अपने नौकर सुक्का के विरुद्ध गौ हत्या का झूठा आरोप लगाता है तथा पंचायत के द्वारा दंडित किया गया। जमींदार, मुखिया और पुरोहित अपनी सवर्ण मानसिकता के बल

पर दलितों का श्रम शोषण करना, प्रताड़नाएं देना तथा न्याय का कुछ चक्र रचते आए हैं। ग्रामीण परिवेश में दलितों के साथ होने वाले अन्याय का यह जीवंत यथार्थ भी है। 'मुंबई कांड' कहानी में दलित वर्ग पर होने वाले हत्याकांड, आगजनी, हिंसा एवं अत्याचारों का चित्रण हुआ है। मंडल आयोग, उत्तराखंड और मुंबई में होने वाली हिंसा से दलितों में गहरा आक्रोश था विशेषकर मुंबई में डॉ. अंबेडकर की मूर्ति को अपमानित करना तथा उनके समर्थकों पर गोली चलाना कायरता का कार्य था। कहानी में बाबासाहेब की मूर्ति का अपमान, जन आंदोलन, हिंसा, पुलिस फायरिंग, दलितों की हत्या आदि घटनाओं का यथार्थ उभरता है। इस कहानी का दलित पत्र सुमेर जो इस घटना का बदला लेना चाहता था। वह आक्रोश में आकर गांधी जी की मूर्ति को अपमानित करने की योजना बनाते हैं किंतु बाबा साहेब की शिक्षा उसे ऐसा करने से रोक देती है- "नहीं ..... यह रास्ता न बुद्ध का है और न ही अंबेडकर का"।5 देश की आजादी के इतने वर्षों बाद भी दलितों पर होने वाले अत्याचारों का सिलसिला बंद नहीं हुआ है। 'मैं ब्राह्मण नहीं हूं' कहानी में शहरी परिवेश के दो संपन्न परिवार अपनी जातियों को छुपा कर रहते हैं। दोनों परिवारों में शिक्षा रोजगार और व्यवसाय के कारण संपन्नता है फिर भी एक परिवार अपनी मिरासी जाति को व दूसरा अपनी बढई जाति को छुपाता रहा। दोनों परिवारों में जाति श्रेष्ठता का अहम् तब टूटता है जब दोनों परिवारों के बीच बेटा- बेटी का विवाह होने वाला था। जाति भेद की सच्चाई ने दोनों परिवारों को विभक्त कर दिया लेकिन नई पीढ़ी की सुनीता उसी परिवार में विवाह करना चाहती है। "पापा.... आप बने रहिए श्रेष्ठ ब्राह्मण.... मिरासी से ऊंचे। लेकिन मैंने कभी भी अपने आप को ब्राह्मण नहीं माना..... यह सच्चाई है। आप जितना मातम मनाएं... मैं शादी अमित से ही करुंगी। उसके पुरखों का मिरासी होना मेरे लिए कोई मायने नहीं रखता...."।6 नई पीढ़ी की विस्तृत सोच ने जाति भेद की श्रेष्ठता को नकारा। नए समाज के विकास में मनुष्य के बीच व्याप्त झूठे जातीय बंधनों को त्यागना समय की आवश्यकता भी है। 'घुसपैठिए' कहानी में दलितों को समाज में बाहरी (outsider) समझे जाने की मानसिकता को उजागर किया गया है। यह कहानी दलितों के मूलभूत अधिकारों के हनन को दर्शाती है।

4. दलित समाज की चुनौतियाँ-

4.1 सामाजिक बहिष्कार और छुआछूत-

वाल्मीकि की कहानियों में दलितों को समाज से अलग-थलग रखने की प्रवृत्ति स्पष्ट दिखाई देती है। दलितों के लिए अलग बस्तियाँ, सार्वजनिक स्थानों पर प्रतिबंध, मानवीय गरिमा का हनन जैसी चुनौतियों का यथार्थ उद्घाटन उनकी कृतियों में किया गया है। उद्धरण:

"हमारे हिस्से में केवल अपमान और दूरी ही आई थी।"7 यह सामाजिक विभाजन की गहराई को दर्शाता है।

4.2 आर्थिक विषमता और श्रम शोषण-

दलित वर्ग को आर्थिक रूप से कमजोर बनाए रखने की साजिश भी उनकी कहानियों में उजागर होती है। वंचित वर्ग को श्रम का उचित मूल्य नहीं, जमींदारी और वर्गीय शोषण, गरीबी का चक्र आदि चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

"मेहनत हमारी, लेकिन पेट खाली।"8 यह वर्गीय और जातिगत शोषण के गठजोड़ को दिखाता है।

4.3 शिक्षा में भेदभाव और वंचना

शिक्षा दलित उत्थान का सबसे बड़ा साधन है, लेकिन वाल्मीकि की कहानियाँ दिखाती हैं कि यह भी दलितों के लिए आसान नहीं है। विद्यालयों में भेदभाव, संसाधनों की कमी, सामाजिक दबाव, जातिगत संकीर्ण मानसिकता आदि चुनौतियां भी दृष्टिगोचर होती हैं।

उद्धरण:

"पढ़ने की चाह थी, पर हर कदम पर रोका गया।"9

शिक्षा के क्षेत्र में असमानता स्पष्ट है।

4.4 मानसिक उत्पीड़न और हीनभावना

लगातार अपमान और भेदभाव के कारण दलितों में हीनभावना उत्पन्न होती है। पढ़े-लिखे शिक्षित नौकरीपेशा लोगों में भी आत्मविश्वास की कमी, मानसिक दबाव, सामाजिक डर आदि चुनौतियों का सामना

करना पड़ता है।

उद्धरण:- “अपमान ने भीतर एक स्थायी डर पैदा कर दिया था।”10

4.5 अस्मिता और आत्मसम्मान का संघर्ष-

दलितों के लिए सबसे बड़ी चुनौती अपनी पहचान स्थापित करना है। ‘मानव’ के रूप में स्वीकार्यता, सम्मानजनक जीवन की चाह, स्वयं की अस्मिता और आत्म संघर्ष जैसी चुनौतियों का उद्‌घाटन ओमप्रकाश वाल्मीकि कृतियां करती हैं।

उद्धरण:

“हम इंसान हैं, यह साबित करना ही संघर्ष है।”11

5. स्त्री दृष्टि से दलित समाज की चुनौतियाँ-

वाल्मीकि की कहानियों में दलित महिलाओं की स्थिति और भी दयनीय दिखाई देती है। दलित महिलाओं के सामने दोहरा शोषण (जाति + लिंग), आर्थिक और सामाजिक उत्पीड़न, सुरक्षा का अभाव मुख्य चुनौतियां हैं। यह दलित विमर्श का महत्वपूर्ण पक्ष है।

6. दलित चेतना और प्रतिरोध का स्वर-

वाल्मीकि की कहानियाँ केवल पीड़ा का वर्णन नहीं करतीं, बल्कि प्रतिरोध का स्वर भी उठाती हैं। वे अन्याय के खिलाफ विद्रोह, आत्मसम्मान की रक्षा, सामाजिक परिवर्तन की आकांक्षा का चित्रण करती हैं। यह दलित साहित्य की क्रांतिकारी भूमिका को दर्शाता है।

7.. आलोचनात्मक दृष्टिकोण-

आलोचकों के अनुसार वाल्मीकि का साहित्य अनुभवजन्य सत्य पर आधारित है। उनकी कहानियाँ समाज के छिपे हुए यथार्थ को उजागर करती हैं। उनकी रचनाएँ केवल साहित्य नहीं, बल्कि सामाजिक आंदोलन का हिस्सा हैं।

8. समकालीन संदर्भ में प्रासंगिकता-

आज भी भारतीय समाज में जातिगत भेदभाव पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है। इसलिए ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियाँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं।

9. निष्कर्ष-

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियाँ दलित समाज की समस्याओं का सजीव चित्रण करती हैं। सामाजिक अन्याय का पर्दाफाश, दलित चेतना का विकास, परिवर्तन की प्रेरणा उनके साहित्य में दृष्टिगोचर होती है। निष्कर्षतः उनका कथा-साहित्य सामाजिक न्याय और समानता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

10. संदर्भ सूची –

1. अपेक्षा, जनवरी- जून 2014, ओमप्रकाश वाल्मीकि: मेरी रचना प्रक्रिया: अस्मिता की तलाश, पृ.20
2. वही, पृ.19
3. वाल्मीकि ओम प्रकाश, सलाम, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 30
4. वाल्मीकि ओमप्रकाश, घुसपैठिये, राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृ.32
5. वाल्मीकि ओमप्रकाश, घुसपैठिये, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.35
6. वाल्मीकि ओम प्रकाश, सलाम, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.18
7. वाल्मीकि, ओमप्रकाश, जूठन (पहला खंड), राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली पृ. 48
8. वाल्मीकि ओमप्रकाश, सलाम, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 70
9. वाल्मीकि, ओमप्रकाश, जूठन (पहला खंड), राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 35
10. वाल्मीकि ओमप्रकाश, घुसपैठिये, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 82)
11. वाल्मीकि ओमप्रकाश, सलाम, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 95